3

वेदों के भाष्यकार

प्रस्तावना

वेद का अर्थ इतना अति सुगम नहीं है। तथा वैदिक साहित्य में जो भाषा व्यवहृत है वह भाषा हमारी संस्कृत भाषा से भिन्न भी है। इसलिए बहुत से आचार्यों के वेदों के अर्थ का प्रतिपादन करने के लिए अनेकों भाष्य किये। उन वेद भाष्यकारों में स्कन्द स्वामि-नारायण-उद्गीथ- माधवभट्ट-वेङ्कट माधव-धनुष्कयज्व-आनन्दतीर्थ-आत्मानन्द-सायण आदि भाष्यकार सर्वत्र सुप्रसिद्ध हैं। इस पाठ में वेद के बहुत से भाष्यकारों के विषय में आप जानेंगे। वहाँ सबसे पहले ऋग्वेद के भाष्यकारों के विषय में, तथा मध्य में शुक्लयजुर्वेद के और अन्त में सामवेदीय भाष्यकारों के विषय में आलोचना की गयी है।

उद्देश्य

यह पाठ पढ़कर आप सक्षम होंगे-

- ऋग्वेद के भाष्यकारों के विषय में जान पाने में;
- शुक्लयजुर्वेद के भाष्यकारों का परिचय प्राप्त कर पाने में;
- उनके देश काल और कृति के विषय में जान पाने में;
- ऋग्वेद आदि का अवलम्बन करके लघुप्रबन्ध काव्य की रचना करने के विषय को जान पाने में।

3.1 ऋग्वेद के भाष्यकार

स्कन्द स्वामी ने ऋग्वेद का सुविस्तृत भाष्य किया। उन्होंने निरुक्त पर भी टीका की

रचना की। इन्होंने ही सर्वप्रथम ऋग्वेदसंहिता का भाष्य रचा। और यह भाष्य वैदिक साहित्य में अतीव आदरणीय है। यह ग्रन्थकार अत्यन्त प्राचीन है। यह भाष्य अच्छी प्रकार विषय का प्रतिपादक होने से लोगों में समाद्रित और प्रशंसनीय है। स्कन्द स्वामी प्रतिभावान् एवं प्रभावशाली विद्वान् थे। स्कन्द स्वामी का जन्म गुजरात प्रदेश के वल्लभी नगर में हुआ था एवं यह नगर विद्यापीठ के लिए प्रदेश की राजधानी स्वरूप था। इनके पिता का नाम भर्तृधरुव था। ऋग्वेदभाष्य के प्रथमाष्टक के अन्त में भाष्यकार ने स्वयम् इसकी चर्चा की-

'वलभीविनिवासस्येतामृगर्थागमसंहृतिम्।
भर्तृध्रुवसुतश्चक्रे स्कन्दस्वामी यथा स्मृतिः॥

3.1.1 स्कन्द स्वामी

आचार्य स्कन्द स्वामी का कौन सा काल था इस विषय में निश्चय से नहीं कहा जा सकता। परवर्ती ग्रन्थों में इसके नामोल्लेख से इसके आविर्भाव का काल सूचित होता है। यह शतपथ ब्राह्मण के विख्यात भाष्यकार हरि स्वामी के गुरु थे। अतः इनका समय सातवीं शताब्दी निश्चिय से कह सकते हैं।

ऋग्वेद का स्कन्द स्वामी ने सुविस्तृत तथा विलक्षण भाष्य किया। इस भाष्य में प्रत्येक सूक्तों के आरम्भ में उस सूक्त के ऋषि और देवता का उल्लेख किया गया है। उसके बोधक प्राचीन अनुक्रमणि ग्रन्थों के श्लोक भी उद्धृत हैं। निघण्टु निरुक्त आदि वैदिक अर्थ के उपबोधक ग्रन्थों से उपयुक्त प्रमाण भी वहाँ सङ्कलित किये गये हैं। यह भाष्य अतीव सरल और अल्पाक्षर है। यहाँ संक्षेप से व्याकरण-विषयक तथ्यों का उल्लेख है। सायण भाष्य के प्रथमाष्टक के समान व्याकरण का अतिविस्तार से यहाँ प्रदर्शन नहीं किया गया है। सायणकृत ऋगभाष्य के ऊपर स्कन्द स्वामी के भाष्य का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। इसके अनेक उदाहरण हैं। स्कन्द स्वामी का भाष्य ऋग्वेद के चतुर्थाष्टक पर्यन्त ही उपलब्ध होता है। शेष आधे की पूर्त्ति अन्य दो आचार्यों ने की है। जिसका वर्णन आगे होगा। अनन्त शयन ग्रन्थावली में इस भाष्य का अब प्रकाशन क्रमशः आरम्भ हो चुका है।

पाठगत प्रश्न

297. भाष्य करने वाले कुछ विद्वानों के नाम लिखो?

298. स्कन्दस्वामी ने किस पर टीका लिखि?

299. ऋग्वेद संहिता का सर्वप्रथम भाष्य अभी किस का उपलब्ध होता है ?

300. स्कन्दस्वामी का जन्म कहाँ हुआ?

301. स्कन्द स्वामी के पिता का क्या नाम था?

302. हरि स्वामी के गुरु कौन थे?

303. शतपथ ब्राह्मण के विख्यात भाष्यकार कौन थे?

304. स्कन्द स्वामी ने किसका सुविस्तृत भाष्य किया?

3.1.2 नारायण

ऋग्वेदभाष्य में वेङ्कटमाधव ने लिखा कि-

''स्कन्दस्वामी नारायण उद्गीथ इति ते क्रमात्।
चक्रुः सहैकमृग्भाष्यं पदवाक्यर्थगोचरम्''॥

इससे ज्ञात होता है कि नारायण और उद्गीथ स्कन्द स्वामी के समय में ही हुए। नारायण ने ऋग्वेद भाष्य की रचना में स्कन्द स्वामी की सहायता की, यह वेङ्कट माधव कहते हैं। उद्गीथ का उल्लेख सायण और आत्मानन्द ने किया। उनकी भाष्य शैली स्कन्द स्वामी की भाष्य शैली की तरह है। श्लोक क्रम और शब्द से अनुमान लगाया जाता है कि ऋग्वेद के मध्यभाग पर नारायण ने अपना भाष्य लिखा। कुछ विद्वान साम भाष्यकार माधव के पिता नारायण तथा ऋग्वेद भाष्य के कर्त्ता नारायण को एक ही मानते हैं। इसके समय का कोई भी सुस्पष्ट प्रमाण उपलब्ध नहीं होता है। इसका भी समय विक्रम की सातवीं शताब्दी ही प्रामाणित होता है।

पाठगत प्रश्न

305. नारायाण और उद्गीत किसके समय थे?

306. नारायण ने ऋग्वेद के भाष्य में स्कन्दस्वामी की सहायता की,यह किसका मत है?

307. नारायण किसके समय में हुए?

3.1.3 उद्गीथ

वेंकट माधव की कथा के अनुसार ज्ञात होता है कि उद्गीथ ने स्कन्द स्वामी के ऋग्भाष्य को लिखने में सहायता की। इस महापुरुष ने ऋग्वेद के अन्तिम भाग का भाष्य किया। प्रत्येक अध्याय की समाप्ति पर उसने अपने विषय में लिखा- वनवासीविनिर्गताचार्य उद्गीथ कृत ऋग्भाष्य में.....अध्याय समाप्त इस कथन से होता है इसलिए उद्गीथाचार्य का वनवासियों के साथ सम्बन्ध था ऐसा प्रतीत होता है। प्राचीनकाल में आधुनिक कर्णाटक

का पश्चिम भूखण्ड 'वनवासीप्रान्त' इस नाम से विख्यात था। अत: कहा जाता है कि- उद्गीथाचार्य इसी प्रान्त के निवासी थे ऐसा अनुमान लगाया जाता है। इस महापुरुष के विषय में इससे अधिक कुछ भी ज्ञात नहीं है।

सायण और आत्मानन्द ने उद्गीथ का नामोल्लेख अपने भाष्य में किया। उनकी भाष्य शैली भी स्कन्द स्वामी की भाष्यशैली की तरह ही है। इसका प्रभाव सायण के भाष्य पर स्पष्ट परिलक्षित होता है। सायण ने ऋग्वेद के इस मन्त्र भाष्य में (10/46/5) उद्गीथ की व्याख्या का उल्लेख किया। इससे उद्गीथ सायण के पूर्ववर्ती भाष्यकार सिद्ध होते हैं। यह व्याख्या उद्गीथ के भाष्य में उपलब्ध होती है। यह भाष्य ऋग्वेद के दसवें मण्डल के पाँचवे सूक्त से लेकर तिरासीवे (83) सूक्त के पाँचवे मन्त्रपर्यन्त है। 1934 ईसवी में लाहौर नगर के डी.ए.वी. महाविद्यालय के शोधविभाग ने इस भाष्य के प्रारम्भिक आधे भाग को प्रकाशित किया। अन्तिम आधा भाग अभी भी अमुद्रित है। सायण भाष्य के साथ उद्गीथ भाष्य की यदि तुलना करें तो ज्ञात होता है कि सायण ने भाष्य के लेखन के लिए उद्गीथ भाष्य में स्थित विपुलसाधनों का साधु उपयोग करके ही अपना भाष्य लिखा। अत एव तिलक वैदिक संशोधन मण्डल में प्रकाशित सायण भाष्य की त्रुटीयों तथा सन्दिग्ध पाठों के संशोधन के लिए उद्गीथ भाष्य से ही सहायता ली जाती है। एवं प्रसिद्ध सायण भाष्य के पाठ संशोधनार्थ भी इस भाष्य का अतीव महत्त्व है।

पाठगत प्रश्न

308. ऋग्वेद के अन्तिम भाग का भाष्य किसने किया?

309. प्राचीनकाल में आधुनिक कर्णाटक के पश्चिमीभूखण्ड का क्या नाम था?

310. उद्गीथाचार्य किस प्रान्त के प्राय: निवासी माने जाते हैं ?

311. 1934 ईस्वी में लाहौर नगर के डी.ए.वी. महाविद्यालय के शोधित विभाग ने किस भाष्य के प्रारम्भिक आधे भाग को प्रकाशित किया।

3.1.4 माधव भट्ट

इतिहासकार माधव-नामक चार भाष्यकारों के नामोल्लेख करते हैं। उनमें एक ने सामवेद संहिता और अन्य तीन ने ऋग्वेद पर भाष्य लिखा। कुछ के मत में माधव नामक कोई भी भाष्यकार नहीं हुआ। सायण अथवा वेङ्कट ही 'माधव' इस नाम विख्यात थे। अन्यों के मत में माधव सायण और वेङ्कट से भिन्न थे। माधव का ऋग्वेद पर विलक्षण पाण्डित्य दिखता है। सायण और वेङ्कट दोनों ने माधव के भाष्य का अनुसरण किया। अन्य भी एक माधव है। जिसकी ऋग्वेद के पहले अष्टक की टीका अभी ही मद्रास विश्वविद्यालय से प्रकाशित हुई। अतीव सारगर्भित है यह टीका विस्तृत नहीं। तो भी मन्त्रों

के अर्थावबोधन में नितान्त महत्त्वपूर्ण है यह टीका पण्डित साम्बशिव शास्त्री वेङ्कटमाधव का जन्म बाहरवीं शताब्दी में हुआ ऐसा मानते हैं। वेङ्कट का भाष्य अतिसंक्षिप्त है। उन्होंने पर्यायवाची पदों को रख कर मन्त्रों के साथ अर्थ ग्रहण करने का प्रभूत प्रयत्न किया।

यह माधवभट्ट ऋग्वेद के महान् विद्वान् थे यहाँ पर सन्देह का अवसर नहीं है। इस टीका के लेखन से पूर्व ही उन्होंने ग्यारह अनुक्रमणी लिखी। जिनमे प्रत्येक अनुक्रमणी शब्द कोष के समान रह कर ऋग्वेद के शब्द और अर्थों को प्रकट करने में समर्थ है। इन उपलब्ध अनुक्रमणीयों में केवल दो ही अनुक्रमणी प्रकाशित हैं। वे नामानुक्रमणी और आख्यातानुक्रमणी नाम से प्रसिद्ध हैं। इनके अध्ययन से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यहाँ ऋग्वेद के नाम और धातुओं का एकत्र संग्रह है। और भी अधिक अति महत्त्वपूर्ण अनुक्रमणी-निर्वचनानुक्रमणी-स्वरानुक्रमणी-छन्दानुक्रमणी आदि आज भी उपलभ्यमान नहीं होती हैं। इन अनुक्रमणियों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अनुक्रमणी 'स्वरानुक्रमणी भी उपलब्ध' नहीं होती है। इस ग्रन्थ से वैदिकस्वर का जितना ज्ञान हो सकता है उतना अन्य टीकाओं से नहीं हो सकता। इसके वैशिष्ट्य का सङ्केत वेदों के मर्मज्ञ विद्वान देवराज यज्वा ने पहले ही निघण्टु के निर्वचन से प्राप्त कर लिया था। इससे प्रतीतहोता है कि देवराजयज्वा माधव से भ्रान्ति शून्यता से भी परिचित नहीं थे। इस ग्रन्थ की प्रस्तावना में इन्होंने वेङ्कटमाधव का सङ्केत किया। यह हो सकता है कि यहाँ माधव कथन का वेङ्कटमाधव से ही अभिप्राय हो। इस ग्रन्थ के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि माधव के द्वारा निर्दिष्ट विषयों में एक भी निर्देश वेङ्कटमाधव के ग्रन्थ में उपलब्ध नहीं होता है। और भी कुछ निर्देश सायण माधव के बृहद्भाष्य में ही मिलते हैं। यह ग्रन्थ उसकी स्वयं की रचना नहीं है। यदि यह समग्रग्रन्थ उपलब्ध हो जाए तो देवराजयज्वा के सारे निर्देश इस अभिनव माधव के ग्रन्थ में ही मिलने की सम्भावना है। इस ग्रन्थ का जितना अंश उपलब्ध हुआ है उसमें आधे से अधिक निर्देश मिलते हैं। इसलिए यह माधव वेङ्कटमाधव से भिन्न ही है यह प्रमाणित होता है।

पाठगत प्रश्न

312. इतिहासकार किन चार भाष्यकारों का नामोल्लेख करते हैं?

313. माधव का विलक्षण पाण्डित्य कहाँ दिखता है?

314. किन दो विद्वानों ने माधव भाष्य का अनुसरण किया?

3.1.5 वेङ्कट माधव

वेङ्कट माधव का सम्पूर्ण-ऋक्संहिता पर भाष्य प्रणीत है। कुछ आलोचक अनुमान लगाते

हैं कि इस विद्वान् ने ऋक्संहिता पर दो भाष्य लिखे। वेङ्ट माधव ने स्वरचित प्रथम भाष्य के अन्तिम भाग में अपने वंश का परिचय दिया। उसके अनुसार इस वेङ्कट माध व ने वसिष्ठ गोत्र में जन्म प्राप्त किया। इनके पूर्वज आन्ध्र प्रदेश में स्थित दक्षिणा पथीय चोल देश में रहते थे। इनके पिता वेङ्कटाचार्य और माता सुन्दरी देवी थी। इनका मातृगोत्र भी वसिष्ठ था। इनके एक सङ्कर्षण नामक अनुज भी थे। वेङ्कट माधव के वेङ्कट और गोविन्द नामक दो पुत्र भी थे। इनके काल का निर्णय करने के लिए एक ही उपाय है जिससे इनका समय विशेष रूप से निर्धारित किया जा सके।

माधव का भाष्य अत्यन्त संक्षिप्त है। **'वर्जयन् शब्दविस्तारं शब्दै:कतिपयैरिति।'** यह लिखकर उन्होंने यह तथ्य स्वयं ने स्वीकार किया। इस भाष्य में केवल मन्त्रों के पदों की ही व्याख्या है। भाष्य के संक्षेप के लिए भाष्यकार ने मूल पदों का समावेश अत्यन्त अल्प ही किया। इस भाष्य के अध्ययन से मन्त्रों का अर्थ सरलता से ही ज्ञात हो सकता है। स्कन्द स्वामी के भाष्य की अपेक्षा यह भाष्य अतिसंक्षिप्त है। व्याकरण जन्य तथ्यों का निर्देश तो इस भाष्य में नहीं है। प्राय: सब जगह ब्राह्मण ग्रन्थों का प्रामाण्य अच्छी तरह उल्लिखित है। जिससे माधव की ब्राह्मण ग्रन्थों के विषय में विशेष व्युत्पत्ति प्रतीत होती है। माधव ने कहा कि वेदों के गूढ अर्थ के बोधार्थ ब्राह्मण ग्रन्थ नितान्त उपयोगी हैं। इसलिए उनका कथन है कि-

'संहितायास्तुरीयांशं विजानन्त्यधुनातना:।
निरुक्तव्याकरणयोरासीत् येषां परिश्रम:॥
अथ ये ब्राह्मणार्थानां विवेद्रार: कृतश्रमा:।
शब्दरीतिं विजानन्ति ते सर्वं कथयन्त्यपि॥

माधवाचार्य की यही आस्था है ब्राह्मणग्रन्थों के प्रति। इसलिए यह भाष्य ब्राह्मण ग्रन्थों के अनुकूल है। दिल्ली से मोतीलाल बनारसी दास ने यह भाष्य प्रकाशित किया। इस भाष्य के सम्पादक डॉ. लक्ष्मणस्वरूप हैं।

पाठगत प्रश्न

315. वेङ्ट माधव ने किस संहिता पर भाष्य लिखा?

316. वेङ्ट माधवचार्य ने किस गोत्र में जन्म लिया?

317. वेङ्ट माधव के पिता का क्या नाम था?

318. वेङ्ट माधव की माता का क्या नाम था?

319. वेङ्ट माधव के अनुज का क्या नाम था?

320. वेङ्ट माधव के कौन दो पुत्र थे?

टिप्पणी

3.1.6 आनन्द तीर्थ

आनन्द तीर्थ ही 'मध्व' नाम से सुप्रसिद्ध थे। यह मध्व वह है जिसने द्वैतवाद का प्रवर्तन किया। इन्होंने बहुत से ग्रन्थों की रचना की। आनन्द तीर्थ ने कतिपय वैदिक मन्त्रों का व्याख्यान भी किया। यह व्याख्या छन्दोबद्ध है। ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के कतिपय मन्त्रों के ऊपर ही यह व्याख्या है। इस सन्दर्भ में राघवेन्द्रयति का यह कथन यथार्थ रूप से प्रमाणित है कि – 'ऋक्शाखागत एक हजार एक सूक्तों में कोई चालीस सूक्तों की व्याख्या श्रीभगवत्पाद के द्वारा ही की गयी।'

श्रीमद् भगवद् गीता में आत्मा के विषय में श्रीकृष्ण का यह कथन है- 'वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यः' अर्थात् सभी वेद मेरा ही प्रतिपादन करते हैं। अतः वेदों में सर्वत्र नारायण का ही प्रतिपादन है इसलिए जो आनन्द तीर्थाचार्य का मत है वह सही तरह से प्रतिपादित है। अपने भाष्य के आरम्भ में आनन्द तीर्थाचार्य ने कहा कि-

'स पूर्णत्वात् पुमान् नाम पौरुषे सूक्त ईरितः।
स एवाखिलवेदार्थः सर्वशास्त्रार्थ एव च॥'

अर्थात् नारायण पूर्ण पुरुष है। अतः पुरुष सूक्त में – 'सहस्त्रशीर्षा पुरुषः' इत्यादि ऋचाओं में वह ही पुरुष पद से अभिहित है। समस्त वेदों और शास्त्रों का अभिप्राय उसी पूर्ण पुरुष का प्रतिपादन है। इसी दृष्टी से ही वैष्णवाचार्य आनन्द तीर्थ ने ऋग्वेद के मन्त्रों का अर्थ किया। जयतीर्थ के कथनानुसार इस भाष्य में आधिभौतिक और आधिदैविक अर्थ के अतिरिक्त आध्यात्मिक अर्थ का भी सुन्दर प्रतिपादन है- और ऋग्वेद का अर्थ तीन प्रकार से होता है। एक प्रसिद्ध अग्निरूप, दूसरा उसके अन्तर्गत ईश्वर के लक्षण, और तीसरा आध्यात्मरूप, तथा यह भाष्य भी तीनों अर्थों को दृष्टि में रख कर किया गया है।' विलक्षण है यह ऋग्वेद का माधव भाष्य। द्वैत वादियों में अतीव प्रसिद्ध है यह भाष्य। इसके मध्यभाग के रचनाकाल से तीस वर्ष बाद प्रसिद्ध मध्वाचार्य ने इसकी जयतीर्थ टीका लिखी। जयतीर्थ टीका की विवृति 1718 विक्रमी सम्वत में नरसिंह ने लिखी। नारायण ने भी अपर विवृति 'भावरत्नप्रकाशिका' -लिखी। आनन्द तीर्थ का आविर्भाव काल विक्रमी सम्वत बारह सौ पचपन से तेरह सौ पैतीस तक (1255- 1335) स्वीकार किया जा सकता है। सुना जाता है कि आनन्द तीर्थ अस्सी वर्ष जीये।

पाठगत प्रश्न

321. आनन्द तीर्थ किस नाम से सुप्रसिद्ध थे?

322. आनन्द तीर्थ का यह व्याख्या कैसा है?

323. 'वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यः' यह वचन कहां का है?

324. आनन्द तीर्थाचार्य किस सम्प्रदाय के थे?

325. व्याख्याकार नारायण कौन थे?

326. मध्वने द्वैतवाद का प्रवर्तन किया या नहीं?

327. मध्वभाष्य किस वेद पर है?

328. जय तीर्थ के टीका की विवृति किसने और कब की?

329. आनन्द तीर्थ का आविर्भाव का काल बताओ?

3.1.7 सायणाचार्य

आचार्य सायण विजय नगर के संस्थापक महाराज बुक्क और महाराज हरिहर के अमात्य और सेनानी थे। सायण वैदिक सम्प्रदाय के यथार्थ ज्ञाता थे। अतएव उनका वेदभाष्य वेदार्थ के सभी भाष्यों में श्रेष्ठ भाष्य है। सायणाचार्य दुर्ग इस वेददुर्ग में सरलता से ही वेदार्थ के जिज्ञासु का प्रवेश करवाते हैं।

महाराज बुक्क के प्रधानमन्त्री का पद सायणाचार्य ने 1394 ईस्वी 1378 ईस्वी तक अलंकृत किया। तदनन्तर उन्होंने 1379 ईस्वी से 1387 ईस्वी अर्थात् मृत्युपर्यन्त महाराज हरिहर के मन्त्रिपद को अलंकृत किया। अत: चोदहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध ही सायण भाष्य का रचनाकाल था ऐसी कल्पना की जा सकती है। सायणाचार्य के ज्येष्ठ भ्राता माधवाचार्य थे। माधवाचार्य ने ही अपने भाई सायणाचार्य को व्याख्या कार्य में प्रवृत्त होने के लिए प्रेरित किया। भाई से प्रेरित होकर ही सायणाचार्य व्याख्या कार्य में प्रवृत्त हुए। इसलिए यह भाष्य माधवीय इस नाम से विश्व प्रसिद्ध हुआ।

पाठगत प्रश्न

330. आचार्य सायण किन दो राजाओं के अमात्य और सेनानी थे?

331. आचार्य सायण के भाष्य का नाम बताओ?

332. महाराज बुक्क का प्रधानमन्त्री पद सायणाचार्य ने कब से कब तक अलंकृत किया?

333. सायण भाष्य का रचना काल बताइए?

334. सायणाचार्य के भाई का नाम बताओ?

335. महाराज हरिहर का मन्त्रीपद सायणाचार्य ने कब अलंकृत किया?

टिप्पणी

3.2 सामवेद के भाष्यकार

3.2.1 माधव

यह माधव सामसंहिता के प्रथम भाष्यकार प्रतीत होते हैं। उसने सामवेद के दोनों खण्ड- छन्दार्चिक और उत्तरार्चिक पर भाष्य किया। इस भाष्य का नाम 'विवरण' है। छन्दार्चिक भाष्य का नाम 'छन्दसिकाविवरण' तथा उत्तरार्चिकभाष्य का नाम 'उत्तरविवरण' है। आज तक यह भाष्य अमुद्रित अवस्था में ही है। सत्यव्रतसामश्रयी महोदयने इस भाष्य का अन्वेषण किया। उन्होंने सर्व प्रथम अपने सायण भाष्य के संस्करण में इस भाष्य का भी कुछ अंशं टिप्पणी-रूप में सन्निविष्ट किया।

माधव के पिता का नाम नारायण था। कतिपय विद्वान् इनको स्कन्द स्वामी के ऋग्भाष्य के पूरक और सहायक नारायण से अभिन्न मानते हैं। किन्तु उन दोनों की अभिन्नता के प्रदर्शक प्रबल प्रमाण का आज भी अभाव है। तो भी इनका आविर्भावकाल निश्चित रूप से बताया जा सकता है। बाहरवीं शताब्दी में देवराजयज्वा ने अपने निघण्टु भाष्य की भूमिका में किसी माधव का निर्देश किया। सम्भवत: यह माधव ही सामभाष्य का-रचयिता है। इतना ही नहीं अपितु बाणभट्ट की कादम्बरी का भी यह श्लोक है-

'रजोजुषे जन्मनि सत्त्ववृत्तये स्थितौ प्रजानां प्रलये तम: स्पृशे।
अजाय सर्गस्थितिनाशहेतवे त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नम:॥

माधव के 'सामविवरण' में यह मङ्गलाचरण के रूप में उपलब्ध होता है। इस श्लोक के 'त्रयीमयाय' इस शब्द से ज्ञात होता है कि यह श्लोक किसी वैदिकग्रन्थ का ही मङ्गलाचरण था। अत: अनुमान किया जाता है कि- सर्वप्रथम सामभाष्य के मङ्गलार्थ माधवने यह श्लोकरचा। भाष्यकार माधव बाणभट्ट के कोई पूज्याचार्य भी हो सकते हैं। बाणभट्ट के पूर्वज भी वेद में पारङ्गत विद्वान् थे। हर्षचरित से प्रमाणित होता है कि बाणभट्ट के गुरु भी कोई वेदवेदाङ्ग में पारङ्गत विद्वान् ही थे। यह घटना पूर्वानुमान को ही पोषित करती है। अत: बाणभट्ट के पूर्ववर्ती माधव का समय विक्रम की सातवीं सदी स्वीकार नहीं किया जा सकता। इसलिए यदि बाणभट्ट सातवीं शताब्दी ईस्वी के प्रारम्भकाल में थे तो माधव का समय छठी शताब्दी कहा जा सकता है। माधव का यह भाष्य अतीव महत्त्वपूर्ण है।

पाठगत प्रश्न

336. सामसंहिता के प्रथम भाष्यकार कौन थे?

337. माधवकृत भाष्य का क्या नाम है?

338. 'विवरण' इस भाष्य का अन्वेषण कर्ता कौन है?

339. माधव के पिता का नाम बताओ?

340. 'त्रयीमयाय'-इस शब्द क्या ज्ञात होता है?

3.2.2 गुणविष्णु

गुणविष्णु ने साम मन्त्रों की व्याख्या रची। उस व्याख्या की मिथिला तथा बङ्गप्रदेश में अतिप्रसिद्धि है। उन्होंने नित्यनैमित्तिक विधनों के उपयोगी साम मन्त्रों की व्याख्या करके अति महत्त्वपूर्ण कार्य किया। ये महापुरुष मिथिला के बङ्गप्रदेश के किसी भाग में रहते थे। इनका छान्दोग्य मन्त्र भाष्य पर एक सुन्दर संस्करण था। वह भाष्य 'कलकत्ता-संस्कृत-परिषद्' नामक संस्था से प्रकाशित हुआ था। इस ग्रन्थ की प्रस्तावना में विद्वानों के सम्पादक गुणविष्णु के विषय में अनेक ज्ञातव्य विषयों का विवेचन किया गया है।

यह छान्दोग्य मन्त्र भाष्य सामवेद की कौथुम शाखा पर है। ('हलायुध का काण्व के विषय में तथा कौथुम के विषय में गुणविष्णु के द्वारा') 'सायणकृत मन्त्र भाष्य का आधार गुणविष्णु का भाष्य ही है' ऐसा आलोचक कहते हैं। हलायुध ने भी इस ग्रन्थ का उपयोग किया यह भी प्रमाण मिलता है। गुणविष्णु बल्लाल सेन अथवा उसके प्रसिद्ध पुत्र लक्ष्मण सेन के राज्यकाल में हुए थे। इसलिए इन गुणविष्णु का समयविक्रम की बाहरवीं शताब्दी का अन्तिम भाग तथा तेरहवीं शताब्दी का आदि भाग निश्चित होता है।

गुणविष्णु का 'छान्दोग्यमन्त्रभाष्य' नितान्त विख्यात ग्रन्थ है। इनके दो अन्य ग्रन्थ-मन्त्र ब्राह्मण भाष्य, और पारस्करगृह्यसूत्र भाष्य भी हैं। इससे ज्ञात होता है कि ये उस समय के प्रख्यात वैदिक विद्वान् थे।

पाठगत प्रश्न

341. गुणविष्णु का साम मन्त्र व्याख्या कहाँ अतिप्रसिद्ध है?

342. गुणविष्णु ने किसकी व्याख्या लिखा?

343. गुणविष्णु कहाँ के थे?

344. छान्दोग्य मन्त्र भाष्य का एक सुन्दर संस्करण कहाँ से प्रकाशित हुआ?

345. गुणविष्णु किसके राज्यकाल में थे?

346. बल्लाल सेन के पुत्र का क्या नाम था?

347. गुणविष्णु का समय बताओ?

348. गुणविष्णु का नितान्त विख्यात ग्रन्थ कौन सा है?

3.3 शुक्ल यजुर्वेद के भाष्यकार

3.3.1 उव्वट

उव्वट काश्मीर प्रदेशीय विद्वान् थे ऐसा बहुत से विद्वानों का मत है। इनका कहीं कहीं 'औबट:' और कहीं 'उवट' नाम भी उपलब्ध होते हैं। उव्वट ने यजुर्वेद संहिता पर अपने नाम का भाष्य लिखा जो आज भी प्राप्त होता है। इनके पिता का नाम 'वज्रट' था। 'ये मम्मट के भ्राता थे' यह सुधासागरकार भीमसेन का मत है। परन्तु उवट के विषय में कुछ तथ्य प्राप्त है। उनके द्वारा रचित यजुर्वेद संहिता भाष्य में एक पद्य उपलब्ध होता है–

'ऋष्यांदीनश्च पुरस्कृत्य अवन्त्यामुवटो वसन्।
मन्त्रभाष्यमिदं चक्रे भोजे राष्ट्रं प्रशासति॥'

उसी भाष्य की एक अन्य पुस्तक में एक और पद्य उपलब्ध होता है–

'आनन्दपुरवास्तव्यवज्रटाख्यस्य सूनुना।
मन्त्रभाष्यमिदं क्लृप्तं भोजे पृथ्वीं प्रशासति॥'

इन दोनों पद्यों के द्वारा 'उव्वट' वज्रट के पुत्र तथा भोज के समकालिक थे ऐसा सिद्ध होता है। यदि ये उव्वट भीम सेन के कथनानुसार मम्मट के भ्राता होते तो मम्मट के जैयटपुत्र होने से उनके भाई उव्वट के भी जैयटपुत्र होते। तब उव्वट के श्लोकोक्त वज्रट किसी भी प्रकार पुत्र नहीं कहे जा सकते। यद्यपि काश्मीर देशीय जैयटगोत्र के वज्रट के दत्तक पुत्र थे ये उव्वट इस कल्पना में जैयटपुत्र उव्वट का वज्रट पुत्रत्व उपपद्यमान होता है, तथापि उनका भोज का समकालिकत्व अनुपपन्न होता है। क्योंकि उनके ज्येष्ठ भ्राता मम्मट भोजराज से अर्वाचिन थे। अत: उनके भ्राता उव्वट भी भोजराज से अर्वाचिन सिद्ध होते हैं। अवन्ती में (उज्जयिनी) रहते हुए उन्होंने भाष्य का निर्माण किया एक जगह ऐसा उल्लेख है, गुजरात के आनन्दपुर में रहते हुए उन्होंने भाष्य लिखा ऐसा दूसरी जगह उल्लेख है, यह भी विप्रतिषिद्ध ही है। यदि उव्वट के पिता वज्रटआनन्दपुर में रहते थे उव्वटने तो उज्जयिनि में रहकर ही भाष्य लिखा ऐसी कल्पना की जाए तो भी वज्रट का काश्मीरिकत्व सन्देहित होता है।

महाराज भोज धारा नगर के शासक और परमार वंशी थे। उसने 1018 ईश्वी में सिंहासना रूढ होकर 1063 ईश्वी पर्यन्त राज्य किया इसलिए उसका काल ग्याहरवीं सदी है। भोज का कविजन प्रियत्व प्रसिद्ध है। शेखगिरि शास्त्री लिखते हैं कि यह भोज धारा से अपनी

राजधानी उज्जयिनी में लाया ऐसा 'आइने अकबरी' पुस्तक में लिखा हुआ है। इसलिए पूर्व उल्लिखित भोज राज का समय 1018 ईश्वी से 1063 ईश्वी तक था। अत: भोज राज के समकालिकत्व से उव्वट ग्याहरवीं सदी के पूर्वार्द्ध में हुए ऐसा निश्चय से कहा जा सकता है। इसका भाष्य लघ्वक्षर होते हुए भी अतीव उज्ज्वल है, तथा सरल और प्रामाणिक है। इस भाष्य में अनेक मन्त्रों का अध्यात्मपरक अर्थ दर्शित है। इससे प्रतीत होता है कि ये मध्ययुग के एक नितान्त प्रौढ वेदज्ञ थे। इनकी अन्य कृतियों में- (क) ऋक्प्रातिशाख्य की टीका, (ख) यजु:प्रातिशाख्य की टीका, (ग) ऋक्सर्वानुक्रमणी भाष्य, और (घ) ईशावास्यो पनिषद्-भाष्य ये चार ग्रन्थ नितान्त प्रौढ, प्रसिद्ध और प्रकाशित हैं।

पाठगत प्रश्न

349. उव्वट किस देश के विद्वान् थे?

350. उव्वट ने यजुर्वेदसंहिता नामक अपना भाष्य लिखा अथवा नहीं?

351. उव्वट के पिता का नाम बताओ?

3.3.2 महीधर

वैदिक काल से ही संस्कृत विद्या का अन्यतम प्रधान केन्द्र काशी थी ऐसा हम सब जानते ही हैं। यहीं गौतम आदि तथा अन्य बहुत से वेदों के मन्त्रद्रष्टा विद्वान हुए। इतिहास पुराणों में भी विशिष्ट पण्डितों से सुसज्जित काशी नगरी का स्पष्ट वर्णन है।

आचार्य महीधर का भी जन्म इसी काशी नगरी में हुआ था। वहां उनके वासस्थान के समीप में एक पुष्करिणी आज है ऐसा परम्परा से सुनते आरहें हैं। ये नागर-ब्राह्मण वंशीय विद्वान् थे। उन्होंने काशी में ही अध्ययन करके विद्वज्जनों में प्रतिष्ठा प्राप्त की। उसके बाद कतिपय ग्रन्थों की रचना करके महीधर काशीनरेश की शरण में गये। इसीलिए प्राय: राजाश्रित: पण्डित: 'महीधर:' इस उक्ती से उनका बोध होता है। वहीं उन्होंने वेददीप नामक सामभाष्य की रचना सम्पादित की। यद्यपि यह भाष्य मौलिक नहीं है तथापि अर्थ की विशदता की दृष्टी से नितान्त ग्राह्य है। इस सामभाष्य की पाण्डुलिपि सरस्वती भवन पुस्तकालय में संगृहीत है। इस भाष्य पर उव्वट भाष्य की स्पष्ट छाया दीखती है। कुछ जगह इस विद्वान् ने निरुक्त श्रौतसूत्रादि ग्रन्थों से उदाहरण देकर याज्ञिक क्रिया का विधानकिया। ये काशीवासी महीधर तन्त्र रहस्यज्ञ थे। ये महीधर वैदिक साहित्य में पारङ्गत थे। महीधराचार्य प्रतिभावान् और विद्वान् थे। तन्त्रादि रहस्यमय शास्त्रों का भी उन्होंने सम्यक् अध्ययन किया। उन्होंने विनय एवं भक्ति के द्वारा गुरुजनों को प्रसन्न किया। जिससे उन्होंने इन्हें गुह्य से भी गुह्यतर रहस्यमयी विषय-वस्तूओं का उपदेश दिया। सर्ववेद पारङ्गत इस परमविद्वान् ने आचार्य की उपाधि प्राप्त की। महीधर ने 'मन्त्रमहोदधि'-नामक तन्त्र रहस्य

टिप्पणी

विवेचक एक ग्रन्थ विक्रम की 1645 शताब्दी (1588 ई) में लिखा। इस ग्रन्थ के अन्त में भाष्यकार ने यह लिखा-

'अब्दे विक्रमतो जाते बाणवेदनृपैर्मिते।
ज्येष्ठाष्टम्यां शिवस्याग्रे पूर्णो मन्त्रमहोदधिः॥'

अतः इसके भाष्यकार का समयसोलहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध निश्चित होता है। उव्वटाचार्य से ये पन्द्रह वर्षबाद में हुए। महीधराचार्य नरसिंह के उपासक थे। इसका उल्लेख बहुत से ग्रन्थों में प्राप्त होता है।

पाठगत प्रश्न

352. वैदिक काल से ही संस्कृत विद्या का अन्यतम प्रधानकेन्द्र क्या था?

353. काशी में उत्पन्न कुछ विद्वानों के नाम लिखो?

354. नागर-ब्राह्मणवंशीय विद्वान् कौन थे?

355. महीधरकाशी में अध्ययन समाप्त करके किसकी शरण में गये?

356. महीधर ने किस वेद का भाष्य लिखा?

357. महीधर तन्त्र रहस्यज्ञ थे अथवा नहीं?

358. 'मन्त्रमहोदधि'- यह ग्रन्थ किसने लिखा?

359. महीधर का समय बताओ?

360. महीधर किसके उपासक थे।

3.3.3 हलायुध

सायण के परवर्त्ती अनन्ताचार्य-आनन्दबोध आदि बहुत से विद्वानों ने काण्व संहिता पर भाष्य किये। किन्तु सायण के पूर्ववर्त्ती प्रधानाचार्यों में हलायुधने ही शुक्ल यजुर्वेद की काण्व संहिता पर विशिष्ट भाष्य रचा। इस भाष्य का नाम 'ब्राह्मणसर्वस्वम्' है। भाष्य के प्रारम्भ में ही हलायुध अपने विषय में कुछ लिखा। बाल्यकाल में ही हलायुध राज पण्डित हो गये थे। नवयौवन में उन्होंने श्वेतछत्र धारण का अधिकार प्राप्त किया। वृद्धावस्था में राजा लक्ष्मण सेन के धर्म अधिकारिपद पर वे नियुक्त हुए।

'बाल्ये ख्यापितराजपण्डितपदं श्वेतार्चिबिम्बोज्ज्वल-
च्छत्रोत्सिक्तमहामहस्तमुपदं दत्वा नवे-यौवने।
यस्मै यौवनशेषयोग्यमखलक्ष्मापालनारायणः
श्रीमान् लक्ष्मणसेनदेवपतिर्धर्माधिकारं ददौ॥

राजा बल्लालसेन के बाद उनके पुत्र 'लक्ष्मणसेन' ने अतीवयोग्यतापुर:सर गौडक्ष्माकी रक्षा की। ग्यारह सौ सत्तर ईश्वी में ये राजसिंहासन पर आरूढ हुए (द्रष्टव्य है- प्राचीन भारत का इतिहास- स्मिथ)। लक्ष्मणसेन ने तीस वर्ष (30 ब.) राज्य किया। आर्यो को मुक्त हाथ से दान दिया। वे पराक्रम में इन्द्र के तुल्य थे। उनके राज्य में सभी सुख से रहते थे। ये तीस वर्ष शासन करके बारहवीं शताब्दी में परलोक सिधारे थे। हलायुध गौड क्षितिपाल लक्ष्मण सेन के धर्माध्यक्ष थे। लक्ष्मण सेन का समय वि.स. (1227-1237 (ईशवी 1170-1200) है। अत: हलायुध भी तत्कालिक ही थे।

हलायुध उस काल के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् थे। हलायुध ने 'ब्राह्मण सर्वस्व' ग्रन्थ लिखा। ये हलायुध शैव दर्शन के आचार्य थे। ये वेद-मीमांसा मर्मज्ञ और वेदपारङ्गत थे। विशेषत: शैव-वैष्णवागम के रहस्यज्ञ विद्वान् थे। इनकी ख्रतियों में ब्राह्मण सर्वस्व, मीमांसा सर्वस्व, वैष्णव सर्वस्व, शैव सर्वस्व, और पण्डित सर्वस्व ये पांच ग्रन्थ नितान्तप्रौढ और प्रसिद्ध थे। हलायुध अपनी योग्यता के बल से गौडराज्याधिपति लक्ष्मणसेन के सभापण्डित और धर्माध्यक्ष बने थे।

पाठगत प्रश्न

361. हलायुध ने किस वेद की संहिता पर अपना विशिष्ट भाष्य रचा?

362. हलायुध के भाष्य का क्या नाम है?

363. लक्ष्मणसेन ने कितने वर्ष राज्य किया?

364. लक्ष्मणसेन का समय बताओ?

365. हलायुध किस दर्शन के आचार्य थे?

366. हलायुध के प्रसिद्ध ग्रन्थ कौन से हैं?

3.3.4 भट्ट भास्कर

भट्ट भास्कर के समय का निर्धारण वैदिकभाष्यकारों के इतिहास के लिए नितान्त आवश्यक है। सायणाचार्य ने अपने भाष्य में भट्ट भास्कर मिश्र का स्मरण किया। इससे ज्ञात होता है कि वे विक्रम से पाँच सौ वर्ष पूर्व वर्ती थे। सायण के पूर्ववर्ती लक्ष्मणापर नामक वेदाचार्य ने सुदर्शन मीमांसा ग्रन्थ में न केवल भटभास्कर मिश्र का नामोल्लेख किया, अपितु उन्होंने उनके ज्ञान यज्ञ नामक भाष्य ग्रन्थ का भी उल्लेख किया। 'तत्र भाष्यकृता भास्करमि श्रेण ज्ञानायज्ञाख्ये भाष्ये एतत्प्रमाण व्याख्या नसम ये चरणमिति देवता विशेष इति तदनुगुणमेव व्याख्यातम्।। (सुदर्शनमीमांसा पृ.4)। देवराज यज्वा ने भी अपने ग्रन्थ में इस भाष्य को उद्धृत किया। प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् हरदत्त ने एकाग्नि काण्ड के अपने

टिप्पणी

भाष्य में भास्करकृत भाष्य से सहायता प्राप्त की थी। अत: भास्कर मिश्र का समय विक्रम की ग्याहरवीं शताब्दी कहा जा सकता है। हरिदत्त ने अपने भाष्य में आर्यभट्टीय-अमरकोष-काशी का आदि ग्रन्थों का नामोल्लेख किया। इससे भी हरदत्तादिभाष्य कारों से इनका पूर्वकालिकत्वं प्रतीत होता है। यह प्रमाण भी पूर्वकथित समय को सिद्ध करता है।

भट्टभास्कर ने तैत्तिरीय संहिता पर ज्ञान यज्ञ नामक भाष्य लिखा। यह भाष्य बहुत से तथ्यों द्वारा समृद्ध है। प्रमाणपुर:सर कतिपय वैदिक ग्रन्थों के मन्त्रों के उद्धरण इस भाष्य में उपस्थापित हैं। विद्वान् भट्टभास्कर ने लुप्तनिघण्टुग्रन्थ के उद्धरण संगृहीत किये। उसने मन्त्रों के अर्थप्रदर्शन के समय विभिन्न आचार्यों के मत भी प्रदर्शित किये। इस भाष्य में न केवल यज्ञपरक अर्थ का निर्देशन है, अपितु अध्यात्म और अधिदैव पक्षों के अर्थ का भी प्रदर्शन किया गया है। जैसे- 'हंस: शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसत्' इस प्रसिद्ध मन्त्र में 'हंस'-पद की तीन प्रकार से व्याख्या की गयी। वह इस प्रकार है= अधियज्ञ पक्ष में हंसपद की व्याख्या - 'हन्ति पृथिवीमिति हंस:' अधिदैव पक्ष में -हंसपद का अर्थ आदित्य होता है, तथा अध्यात्म पक्ष में - 'हंस' - पद का अर्थ 'आत्मा' किया गया। अत: इस भाष्य का वैदिक साहित्य में अतीव महत्त्व है।

3.4 अथर्व वेद के भाष्यकार

3.4.1 गोविन्द स्वामी

तेहरवीं शताब्दी में उत्पन्न 'दैव' पद की टीका 'पुरुषाकार' है। इस टीका के कर्त्ता श्रीकृष्ण लीलांशुक मुनि थे। श्रीकृष्ण लीलांशुक मुनि ने 198 कारिकाओं की टीका में गोविन्द स्वामी का नामोल्लेख किया। यह ग्रन्थ अनन्तशयन ग्रन्थ माला से प्रकाशित है। यह उद्धरण माधवीयधतुवृत्ति में भी मिलता है। बौधयनीय धर्म विवरण के भी कर्ता सम्भवत: ये ही थे। इस ग्रन्थ में कुमारिल तथा उसके ग्रन्थ तन्त्रवार्तिक के भी उद्धरण उपलब्ध होते हैं। इसलिए इनका समय आठवीं शताब्दी के बाद तथा तेहरवीं शताब्दी के पूर्व अर्थात् सम्भवत: दशवीं शताब्दी कहा जा सकता है।

पाठगत प्रश्न

367. 'दैव' पद की कौन सी टीका है?

368. पुराषाकार टीका के कर्त्ता कौन थे?

369. पुरुषाकार यह ग्रन्थ कहां से प्रकाशित हुआ था?

370. गोविन्द स्वामी का काल बताओ?

3.4.2 षड्गुरु शिष्य

इस विद्वान टीकाओं की सङ्ख्या कम नहीं है। इस विद्वान् ने ऐतरेयब्राह्मण, ऐतरेयारण्यक, आश्वलायन श्रौतसूत्र, और आश्वलायन गृह्यसूत्र की व्याख्या की। वेदान्तदीपिकाख्य कात्यायन की सर्वानुक्रमणि की व्याख्या इस विद्वान् की है जो कि उसके सरस रचना कौशल के द्वारा अत्यन्त प्रसिद्ध है। यह व्याख्या आक्स्फोर्ड-विश्वविद्यालय के द्वारा सुसम्पादित एवं प्रकाशित है। ग्रन्थकार ने स्वयं इस टीका का रचनाकाल 1234 सं. तथा तदनुसार 1177ई. लिखा। अत: सद्गुरु शिष्य का समय बाहरवीं शताब्दी का पूर्वार्ध ही है, ऐसा निश्चय से कहा जा सकता है।

पाठगत प्रश्न

371. सद्गुरु शिष्य ने किनकी व्याख्या लिखी?

372. सर्वानुक्रमणी व्याख्या किसने सुसम्पादित की?

पाठ का सार

इस पाठ में हमने ऋक्सामयजुरथर्व वेदों के भाष्यकारों के विषय में विस्तृत ज्ञान प्राप्त किया। ऋग्वेद के भाष्यकारों में प्रसिद्ध हैं स्कन्दस्वामी-नारायणोद्गीथ-माधवभट्ट-वेङ्कटमाधव-आनन्दतीर्थ-सायणाचार्य आदि। उनके जन्मस्थान जन्म काल और उनके द्वारा किये गये वेदभाष्यों के विषय में ज्ञान प्राप्त किया। और उसके बाद हमने माधव और गुणविष्णु इन दोनों सामवेद के भाष्यकारों का परिचय प्राप्त किया। और उनके काल आदि के विषयमें बहुत सी चर्चा की। उसके बाद उव्वट-महीधर-हलायुध-भट्ट भास्कर आदि शुक्लयजुर्वेद के भाष्यकारों के विषय में ज्ञान प्राप्त किया। और उनमे उव्वट के काल के विषय में प्रवर्तमान विवाद का अवलोकन किया। तदनन्तर अथर्व वेद के भाष्यकार गोविन्द स्वामी और षड्गुरुशिष्य के देश काल आदि के विषय में जाना। यद्यपि इनसे अतिरिक्त भी अनेक वेद भाष्यकार हैं तो भी ये ही अधिक प्रसिद्ध हैं। अत: इनके जीवनावलोकन के साथ ही हमने वेदभाष्यकारों का सामान्य ज्ञान इस पाठ से प्राप्त किया। और उनके द्वारा लिखित भाष्यों में कौन से प्रकाशित हैं और कौन से अभी तक अप्रकाशित हैं यह भी जाना।

पाठान्त प्रश्न

373. स्कन्द स्वामी की उपलब्धियों का कीर्तिका वर्णन करो?

टिप्पणी

374. माधवभट्ट के देशकाल और कीर्ति का परिचय लिखो?

375. आनन्द तीर्थाचर्य का परिचय लिखो?

376. सायणाचार्य की कीर्ति का वर्णन करो?

377. गुणविष्णु के देशकाल और कीर्ति के परिचय की व्याख्या करो?

378. उव्वट के विषय में संक्षेप से लिखिए?

379. हलायुध की कीर्ति की व्याख्या कीजिए?

380. भट्टभास्कर का परिचय दीजिए?

381. गोविन्द स्वामी के विषय में संक्षेप से लिखिए?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

उत्तर (ऋग्वेद के भाष्यकार)

382. स्कन्दस्वामी-नारायण-उद्गीथ-माधवभट्ट-वेङ्कटमाधव-आनन्दतीर्थ-आत्मानन्द-सायण आदि भाष्यकारों में सुप्रसिद्ध पण्डित हैं।

383. स्कन्द स्वामी ने निरुक्त पर टीका लिखी।

384. ऋग्वेद संहिता के सर्वप्रथम भाष्यकार स्कन्द स्वामी थे।

385. स्कन्दस्वामी का जन्म गुजरात की विद्यापीठ प्राचीन काल की विख्यात राजधानी वल्लभी में हुआ।

386. स्कन्दस्वामी के पिता का नाम भर्तृध्रुव था।

387. हरिस्वामी के गुरु स्कन्द स्वामी थे।

388. शतपथब्राह्मण के विख्यात भाष्यकार स्कन्द स्वामी थे।

389. स्कन्द स्वामी ने ऋग्वेद के सुविस्तृत भाष्य को रचा।

उत्तर (नारायण)

390. नारायण और उद्गीथ स्कन्द स्वामी के समय में ही थे।

391. नारायण ने ऋग्वेद के भाष्य में स्कन्द स्वामी की सहायता की यह वेङ्कट माधव का मत है।

392. नारायण का समय विक्रम की सातवीं शताब्दी ही प्रामाणित होता है।

टिप्पणी

उत्तर (उद्गीथ)

393. ऋग्वेद के अन्तिम भाग का भाष्य उद्गीथ ने किया था।

394. प्राचीन काल में आधुनिक कर्णाटक का पश्चिमी भूखण्ड 'वनवासीप्रान्त' नाम से विख्यात था।

395. उद्गीथाचार्य 'वनवासीप्रान्त' के प्राय: निवासी थे।

396. उन्नीस सौ पैंतीस ईश्वी में लाहौर नगर के डी.ए.वी. महाविद्यालय के शोधित विभागने इस भाष्य का ऋग्वेद का प्रारम्भिक अर्द्ध भाग को प्रकाशित किया था।

उत्तर (माधवभट)

397. इतिहास कार माधव-नामक चार भाष्यकारों का नामोल्लेख करते हैं।

398. माधव का ऋग्वेद पर विलक्षण पाण्डित्य दिखता है।

399. सायण और वेङ्कट दोनों ने ही माधव के भाष्य का अनुसरण किया।

उत्तर (वेङ्ङकट माधव)

400. वेङ्कट माधव ने सम्पूर्ण ऋक्संहिता पर अपना भाष्य लिखा।

401. वेङ्कट माधव ने वसिष्ठ गोत्र में जन्म ग्रहण किया था।

402. वेङ्कट माधव के पिता वेङ्कटाचार्य थे।

403. वेङ्कट माधव की माता सुन्दरी देवी थी।

404. वेङ्कट माधव के एकसङ्कर्षण नामक अनुज भी थे।

405. वेङ्कट माधव के वेङ्कट और गोविन्द नामक दो पुत्र थे।

उत्तर (आनन्द तीर्थ)

406. आनन्द तीर्थ ही मध्व नाम से सुप्रसिद्ध थे।

407. आनन्द तीर्थ का यह व्याख्यान छन्दो बद्ध है।

408. 'वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्य:' यह वचन श्रीमद्भगवद् गीता में उपलब्ध होता है।

409. आनन्दतीर्था चार्य वैष्णव सम्प्रदाय के थे।

410. नारायण पूर्ण पुरुष है।

411. मध्व ने द्वैतवाद का प्रवर्तन किया।

412. मध्व का भाष्य ऋग्वेद पर है।

413. जयतीर्थ टीका की विवृति 1718 विक्रमी सम्वत में नरसिंह ने लिखी।

414. आनन्द तीर्थ का आविर्भाव काल विक्रमी सम्वत बारह सौ पचपन से तेरह सौ पैतीस तक था।

उत्तर (सायणाचार्य)

415. आचार्य सायण विजय नगर के संस्थापक महाराज बुक्क और महाराज हरिहर के अमात्य और सेनानी थे।

416. आचार्य सायण का वेदभाष्य है।

417. महाराज बुक्क के प्रधनमन्त्री पद को सायणाचार्य ने 1364 ईस्वी से 1378 ईस्वी तक अलंकृत किया।

418. चौदहवीं शताब्दी ईस्वी का उत्तरार्द्ध ही सायण के भाष्य का रचना काल कहा जा सकता है।

419. सायणाचार्य के ज्येष्ठ भ्राता का नाम माधवाचार्य था।

420. सायणाचार्य ने 1379 ईस्वी से 1389 ईस्वी पर्यन्त महाराज हरिहर के मन्त्री पद को मृत्यु पर्यन्त अलङ्कृत किया।

उत्तर (माधव)

421. माधव साम संहिता के प्रथम भाष्यकार थे।

422. माधव कृत भाष्य का नाम विवरण है।

423. 'विवरण' इस भाष्य के अन्वेष्टा सत्यव्रत सामश्रयी महोदय हैं।

424. माधव के पिता का नाम नारायण था।

425. 'त्रयीमयाय' - इस शब्द से ज्ञात होता है कि यह श्लोक किसी वैदिक ग्रन्थ का ही मङ्गलाचरण था।

उत्तर (गुण विष्णु)

426. गुण विष्णु के साम मन्त्र व्याख्यान का नाम मिथिला और बङ्गप्रदेश में अतिप्रसिद्ध है।

427. गुणविष्णु ने साम मन्त्रों की व्याख्या की।

428. ये महापुरुष मिथिला अथवा बङ्गप्रदेश के किसी भाग में रहते थे।

टिप्पणी

429. छान्दोग्य मन्त्र भाष्य का एक सुन्दर संस्करण 'कलकत्ता-संस्कत परिषद्' संस्था से प्रकाशित हुआ।

430. गुणविष्णु का समय विक्रम की बारहवीं शताब्दी का उत्तर भाग था तेहरवीं शताब्दी का आदि भाग निश्चित किया जाता है।

431. बल्लालसेन के पुत्र का नाम लक्ष्मणसेन था।

432. गुणविष्णु का समय विक्रम की बारहवीं शताब्दी का उत्तर भाग तथा तेहरवीं शताब्दी का आदि भाग निश्चित किया जाता है।

433. गुणविष्णु का नितान्तविख्यात ग्रन्थहै छान्दोग्यमन्त्र भाष्य।

उत्तर (उव्वट)

434. उव्वट काश्मीर प्रदेश के विद्वान् थे।

435. उव्वट ने यजुर्वेद संहिता पर अपने नाम का भाष्य लिखा।

436. उव्वट के पिता का नाम वज्रट था।

उत्तर (महीधर)

437. वैदिक काल से ही संस्कृत विद्या की अन्यतम प्रधान केन्द्र काशी थी।

438. काशी में गौतम आदि और अन्य भी बहुत से विद्वान हुए।

439. महीधर नागर-ब्राह्मण वंशीय विद्वान् थे।

440. महीधर काशी में अध्ययन समाप्त करके काशी के राजा की शरण में गये।

441. महीधर ने सामवेद का भाष्य लिखा।

442. महीधर तन्त्ररहस्यज्ञ थे।

443. 'मन्त्रमहोधि' - यह ग्रन्थ महीधर ने लिखा।

444. महीधर भाष्यकार का समय सोलहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध निश्चित होता है।

445. महीधर नरसिंह के उपासक थे।

उत्तर (हलायुध)

446. हलायुध का शुक्ल यजुर्वेद की काण्व संहिता पर अपना विशिष्ट भाष्य है।

447. हलायुध के भाष्य का नाम 'ब्राह्मणसर्वस्व' है।

448. लक्ष्मण सेन ने तीस वर्ष तक (30 ब.) राज्य किया।

449. लक्ष्मण सेन का समय वि.स. 1226-1237 (ईस्वी 1170-1200) है।

450. हलायुध शैव दर्शन के आचार्य थे।

451. हलायुध के ब्राह्मण सर्वस्व, मीमांसा सर्वस्व, वैष्णव सर्वस्व, शैव सर्वस्व, और पण्डित सर्वस्व ये पांच ग्रन्थ नितान्त प्रौढ एवं प्रसिद्ध ग्रन्थ थे।

उत्तर(गोविन्दस्वामी)

452. 'दैव'इस पद की टीका 'पुरुष कार' है।

453. पुराषाकार इस टीका के कर्ता श्रीकृष्ण लीलांशुक मुनि हैं।

454. पुरुषाकार यह ग्रन्थ अनन्तशायी ग्रन्थमाला में प्रकाशित है।

455. गोविन्दस्वामी का समय आठवीं शताब्दी के बाद तथा तेहरवीं शताब्दी से पूर्व अर्थात् सम्भवत: दशवीं शताब्दी कहा जा सकता है।

उत्तर(सद्गुरुशिष्य)

456. सद्गुरुशिष्य ने ऐतरेयब्राह्मण ऐतरेयारण्यक, आश्वलायन श्रौतसूत्र, और आश्वलायन गृह्यसूत्र की व्याख्या लिखी।

457. सर्वानुक्रमणी की व्याख्या आक्सफोर्ड-विश्वविद्यालय के द्वारा सुसम्पादित है।

तीसरा पाठ समाप्त